क्रूस का संदेश
पाठ 2, जुलाई 11, 2026 के लिए
हिंदी अनुवादक: पादरी विजय पाल सिंह

“क्योंकि क्रूस की कथा नाश होनेवालों के
लिये मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पानेवालों के
लिये परमेश्वर की सामर्थ्य है।”
(1 कुरिन्थियों 1:18)

1 कुरिन्थियों 1:17-31 इस बात की चर्चा करता है कि क्रूस किस प्रकार लोगों के जीवन को प्रभावित करती है।

विश्वासियों के लिए, क्रूस उद्धार का प्रतीक है। परन्तु पहली शताब्दी में रहने वाले लोगों के लिए, क्रूस केवल एक अपराधी की लज्जाजनक मृत्यु का प्रतीक थी।

किसी ऐसे व्यक्ति के द्वारा उद्धार पाया जाए जो क्रूस पर मारा गया और फिर जी उठा? मनुष्यों के लिए यह मूर्खता, निरर्थकता और निर्बलता प्रतीत होती है। परन्तु हममें से जिन्होंने पवित्र आत्मा की पुकार के लिए अपने हृदय खोल दिए हैं, उनके लिए क्रूस "परमेश्वर की सामर्थ्य, ... बुद्धि, धार्मिकता, पवित्रीकरण और छुटकारा" है (1 कुरिन्थियों 1:18, 30)।

- परमेश्वर की बुद्धि
- क्रूस की मूर्खता
- परमेश्वर की सामर्थ्य
- क्रूस का संदेश
- परमेश्वर की मूर्खता और निर्बलता

परमेश्वर की बुद्धि

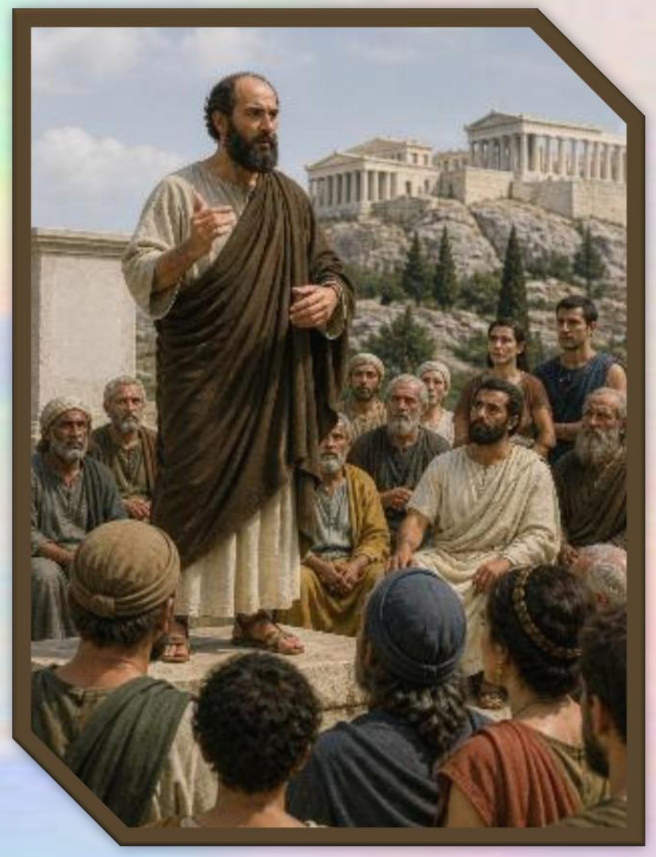

“परन्तु जो बुलाए हुए हैं, क्या यहूदी क्या यूनानी, उनके निकट मसीह परमेश्वर की सामर्थ्य और परमेश्वर का ज्ञान है।”
(1 कुरिन्थियों 1:24)

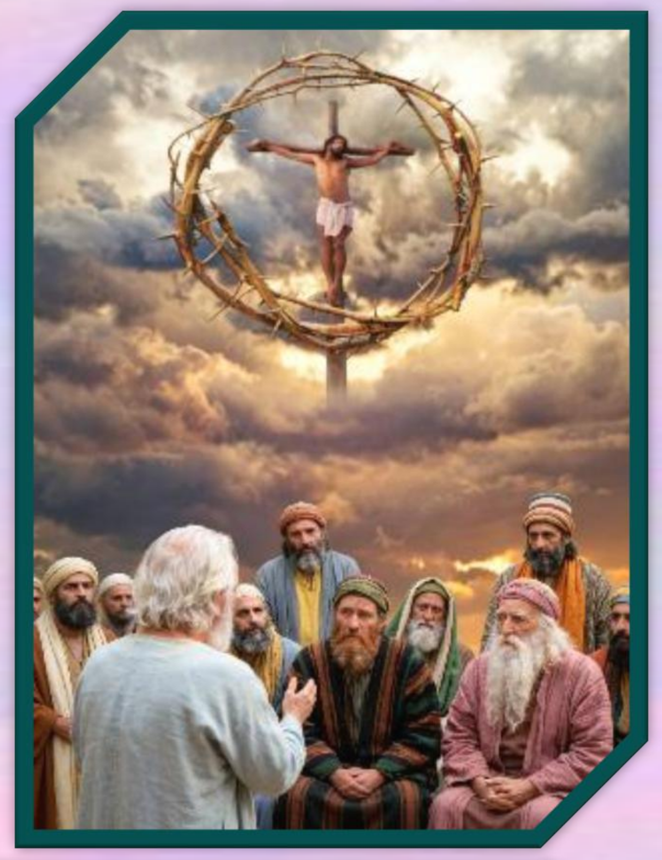

एथेंस में, पौलुस ने बुद्धिमानों को समझाने के लिए मानवीय बुद्धि का उपयोग किया था। इसके बाद उसने निश्चय किया कि वह केवल दिव्य बुद्धि का ही उपयोग करेगा।

परमेश्वर ने स्वयं उसे अपना संदेश सुनाने के लिए भेजा था, “शब्दों के ज्ञान के अनुसार नहीं, ऐसा न हो कि मसीह का क्रूस व्यर्थ ठहरे।” (1 कुरिन्थियों 1:17)।

पौलुस द्वारा प्रचारित दिव्य बुद्धि क्या है?

परमेश्वर की बुद्धि “बुद्धिमानों की बुद्धि को नष्ट” कर देती है; वह “समझदारों की समझ को तुच्छ” ठहराती है (1 कुरिन्थियों 1:19); और उसने “संसार की बुद्धि को मूर्खता” ठहराया है (1 कुरिन्थियों 1:20)।

सारी मानवीय तर्कशक्ति के विपरीत, परमेश्वर की बुद्धि इस बात में प्रकट होती है कि वह “प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करने वालों का उद्धार” करता है (1 कुरिन्थियों 1:21)।

क्रूस की मूर्खता

"परन्तु हम तो उस क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह का प्रचार करते हैं, जो यहूदियों के लिये ठोकर का कारण और अन्यजातियों के लिये मूर्खता है" (1 कुरिन्थियों 1:23)

यूनानी शब्द *मोरिया* (पागलपन, मूर्खता, नासमझी) का उपयोग 1 कुरिन्थियों में पाँच बार किया गया है:

- "क्योंकि क्रूस की कथा नाश होनेवालों के लिये मूर्खता है" (1 कुरिन्थियों 1:18)
- "परमेश्वर को यह अच्छा लगा कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करनेवालों को उद्धार दे।" (1 कुरिन्थियों 1:21)
- "क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह का प्रचार, ... अन्यजातियों के लिये मूर्खता है" (1 कुरिन्थियों 1:23)
- "शारीरिक मनुष्य के लिए ... परमेश्वर के आत्मा की बातें ... उसकी दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं" (1 कुरिन्थियों 2:14)
- "क्योंकि इस संसार का ज्ञान परमेश्वर के निकट मूर्खता है" (1 कुरिन्थियों 3:19)

क्रूस खोए हुओं के लिए मूर्खता है; उनके लिए जो परमेश्वर को नहीं जानते (अन्यजाति); उनके लिए जो केवल इस संसार की बातों के विषय में सोचते हैं (शारीरिक मनुष्य); और उनके लिए जो केवल अपनी ही बुद्धि द्वारा संचालित होते हैं।

परन्तु क्रूस उनके लिए आशीष है जो उद्धार पाए हुए हैं, अर्थात् उनके लिए जो क्रूस को परमेश्वर के दृष्टिकोण से देखने के लिए तैयार हैं।

परमेश्वर की सामर्थ्य

"क्योंकि क्रूस की कथा नाश होनेवालों के लिये मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पानेवालों के लिये परमेश्वर की सामर्थ्य है।"
(1 कुरिन्थियों 1:18)

क्रूस में यह सामर्थ्य है कि वह मनुष्य की सबसे बुरी अवस्था और परमेश्वर की सर्वोत्तम विशेषता को प्रकट करे (1 कुरिन्थियों 1:18)।

मनुष्य की सबसे बुरी अवस्था	परमेश्वर की सर्वोत्तम विशेषता
पागलपन	सामर्थ्य
अस्वीकार	स्वीकार
आत्म-विनाश	क्षमा
विनाश	उद्धार

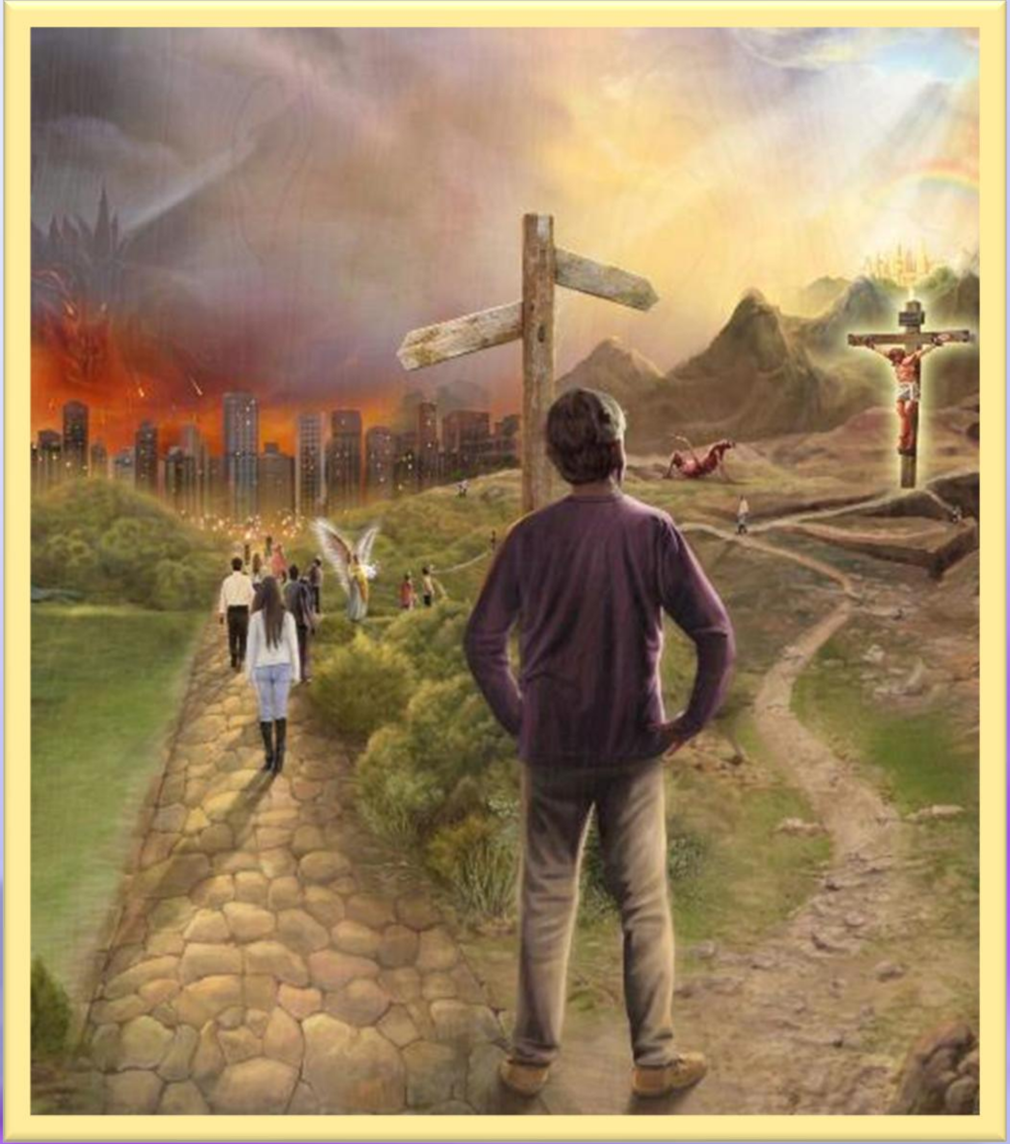

जो लोग क्रूस को अस्वीकार करते हैं, वे अपने गलत कार्यों के परिणाम भोगते हैं, और अन्ततः उसी के द्वारा नष्ट किए जाएँगे जिसे उन्होंने अस्वीकार किया था।

परमेश्वर की सामर्थ्य, जो क्रूस पर प्रकट हुई, मनुष्य के सभी पापों को क्षमा करके उसका परमेश्वर के साथ मेल करा सकती है, और उसे अनन्त जीवन प्रदान कर सकती है (कुलुस्सियों 1:20; 1 पतरस 2:24)।

क्रूस का संदेश

"क्योंकि जब परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार संसार ने ज्ञान से परमेश्वर को न जाना, तो परमेश्वर को यह अच्छा लगा कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करनेवालों को उद्धार दे।" (1 कुरिन्थियों 1:21)

क्रूस के संदेश का प्रचार करना मूर्खता क्यों माना जाता है? (1 कुरिन्थियों 1:21-24)

यहूदी ऐसे मसीहा की अपेक्षा कर रहे थे जो उन्हें रोमी अत्याचार से मुक्त कराए। जब यीशु ने घोषणा की कि उसे क्रूस पर चढ़ाया जाएगा, तो उसके अपने चेले भी भयभीत हो गए। इसके अतिरिक्त, एक यहूदी के लिए वृक्ष पर लटकाया गया व्यक्ति परमेश्वर का शापित माना जाता था (व्यवस्थाविवरण 21:23)। एक अन्यजाति के लिए, जो किसी उद्धारकर्ता की अपेक्षा भी नहीं कर रहा था, निष्कर्ष भी वही था: क्रूस पागलपन है।

परन्तु स्वर्गदूतों के लिए, क्रूस का संदेश कुछ बिल्कुल भिन्न था। यीशु, जिसे वे स्वर्ग में जानते थे, उसने उस मानव जाति के लिए प्रेमवश स्वयं को मरने दिया जिसने उसे अस्वीकार कर दिया था। यही दृष्टिकोण पौलुस अपने प्रचार के द्वारा प्रस्तुत करना चाहता था।

क्रूस का संदेश यह दिखाता है कि हमें उद्धार प्रदान करने के लिए परमेश्वर कितनी दूर तक जाने को तैयार था।

परमेश्वर की मूर्खता और निर्बलता

“क्योंकि परमेश्वर की मूर्खता मनुष्यों के ज्ञान से ज्ञानवान है, और परमेश्वर की निर्बलता मनुष्यों के बल से बहुत बलवान है।” (1 कुरिन्थियों 1:25)

क्या परमेश्वर किसी भी प्रकार से मूर्ख या निर्बल है? (1 कुरिन्थियों 1:25)

निश्चय ही नहीं, क्योंकि परमेश्वर में कोई भी अपूर्णता नहीं है। पौलुस यहाँ केवल एक आलंकारिक तुलना कर रहा है: यदि परमेश्वर के कोई मूर्खतापूर्ण विचार होते, तो भी वे किसी मनुष्य के सबसे बुद्धिमान विचार से अधिक बुद्धिमान होते; और यदि परमेश्वर में कोई निर्बल तर्क होते, तो भी वे मनुष्यों के सबसे शक्तिशाली तर्कों से कहीं अधिक शक्तिशाली होते।

सबसे बुद्धिमान लोगों की समस्त संचित बुद्धि भी मानवजाति के लिए उद्धार की योजना की कल्पना करने में असमर्थ है।

केवल परमेश्वर ही क्रूस पर अर्पित किए गए यीशु के बलिदान की सामर्थ्य के द्वारा छुटकारा प्रदान करने में सक्षम रहा है—“उनके लिए जो उद्धार पा रहे हैं” (1 कुरिन्थियों 1:18), “विश्वास करने वालों के लिए” (1 कुरिन्थियों 1:21), और “जो बुलाए गए हैं उनके लिए” (1 कुरिन्थियों 1:24)।

ध्यान दें कि केवल वे ही लोग *उद्धार पाएँगे* जो पवित्र आत्मा की *बुलाहट के प्रत्युत्तर में* यीशु पर *विश्वास करते* हैं।

“वर्तमान समय में रहने वाली बहुत-सी पीढ़ियों के मन में कलवरी का क्रूस पवित्र स्मृतियों से घिरा हुआ है। क्रूस पर चढ़ाए जाने के दृश्यों के साथ पवित्र संबंध जुड़े हुए हैं। परन्तु पौलुस के दिनों में क्रूस को घृणा और भय की दृष्टि से देखा जाता था। मानवजाति के उद्धारकर्ता के रूप में ऐसे व्यक्ति को प्रस्तुत करना जिसकी मृत्यु क्रूस पर हुई थी, स्वाभाविक रूप से उपहास और विरोध को जन्म देता। [...]

यदि वह यह दिखाने का प्रयास करता कि क्रूस का मानव जाति के उत्थान या मानवता के उद्धार से कोई संबंध है, तो उसे मंदबुद्धि वाला समझा जाता।

किन्तु पौलुस के लिए क्रूस सर्वोच्च रुचि का एकमात्र विषय था। [...] वह अपने व्यक्तिगत अनुभव से जानता था कि जब कोई पापी पिता के प्रेम को, जैसा कि उसके पुत्र के बलिदान में प्रकट हुआ है, देख लेता है और ईश्वरीय प्रभाव के प्रति समर्पित हो जाता है, तब उसके हृदय में परिवर्तन हो जाता है, और तब से मसीह ही उसका सब कुछ और सब में हो जाता है।”

ई जी व्हाइट (प्रेरितों के काम, पृष्ठ 245)